

3 तौहीद के प्रकार

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह को उसकी समस्त विशेषताओं: उपास्य होने, सृजनकर्ता होने तथा उसके नाम एवं गुण में, उसको अकेला मानना।
तथा इसके तीन प्रकार हैं

तौहीद अल-असमा व अल-सिफात

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह ने अपने कुरआन में या अपने रसूल के द्वारा अपना जो नाम या विशेषता बताई है, उन सब में अल्लाह को अकेला मानना, और वह इस प्रकार कि उसने अपने लिए जो साबित किया है उसको साबित करना और जिसका अपनी ओर से इंकार किया है उसका इंकार करना। बिना किसी हेर-फेर, निरस्तिकरण, कैफियत एवं समानता बयान किये हुये के।

तौहीद -ए- उलूहियत

उपासना एवं आराधना योग्य होने में सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह को अकेला मानना या बंदों के कर्मों में अकेला मानना।

तौहीद -ए- रुबूबियत

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह को उसके समस्त क्रियाकलाप में अकेला मानना अथवा अल्लाह तआला को सृष्टि कर्ता होने, बादशाहत तथा तदबीर करने में, अकेला मानना।

दीन की तीन श्रेणियां हैं

एहसान

आप सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह की इबादत इस प्रकार से करें कि मानो आप अल्लाह को देख रहे हैं और यदि आप उसे नहीं देख रहे हैं तो वह आपको तो अवश्य देख रहा है।

(एहसान का) एक ही रुकन है, तथा इसके अंतर्गत दो दर्जे हैं:

- 1- मुशाहदा (दर्शन) वाली इबादत: आप अल्लाह की इबादत व उपासना ऐसे करें मानो उसे देख रहे हों।
- 2- निगरानी वाली इबादत: यदि आप उसे नहीं देख रहे हैं तो वह आपको अवश्य देख रहा है।

ईमान

जुबान से इकरार करना, दिल से विश्वास रखना, शरीर के अंगों से कर्म करना, ईमान (सुकर्म से) बढ़ता है और (कुकर्म से) घटता है।

ईमान के अरकान (स्तंभ): 6

- 1- अल्लाह पर ईमान (विश्वास) रखना।
- 2- उसके फ़रिश्तों पर ईमान रखना।
- 3- उसकी किताबों पर ईमान रखना।
- 4- उसके रसूलों पर ईमान रखना।
- 5- आखिरत के दिन पर ईमान रखना।
- 6- तथा अच्छे व बुरे भाग्य पर ईमान रखना।

इस्लाम

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह को अकेला मानते हुए उसके आगे नतमस्तक हो जाना, उसकी आज्ञाकारी करते हुए आत्मसमर्पण कर देना तथा शिर्क एवं मुश्रिकीन से संबंध विच्छेद कर लेना।

इस्लाम के अरकान (स्तंभ): 5

- 1- अल्लाह एवं उसके रसूल की गवाही देना।
- 2- नमाज़ स्थापित करना।
- 3- ज़कात (दान) देना।
- 4- रमज़ान का रोज़ा रखना।
- 5- जो क्षमतावान हो उसका खाना -ए- काबा का हज्ज करना।

4 मुहर्रमात (वर्जनाओं) के प्रकार:

सगीरा गुनाह

(यह कबीरा से छोटा है) इस्तिग़फ़ार एवं क्षमा याचना करने से कबीरा गुनाह माफ़ हो जाता है तथा बार-बार करने से सगीरा गुनाह कबीरा गुनाह में परिवर्तित हो जाता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: (तुम गुनाहों को तुच्छ समझने से बचो क्योंकि यह किसी व्यक्ति के ऊपर एकत्रित हो जाती है तथा उसका नाश कर देती है)

कबीरा गुनाह

(प्रत्येक वह पाप जिसके करने पर निश्चित दण्ड निर्धारित है) जैसे जादू, मातृ-पिता की अवज्ञा करना, ब्याज खाना, व्यभिचार करना, समलैंगिक होना, झूठ बोलना, शराब पीना, चोरी करना, ग़ीबत करना, बिना किसी कारण के मासूम जान को मारना, अनाथ का माल खाना।

शिर्क -ए- असग़र

(यह इस्लाम धर्म से निष्कासित नहीं करता है, यह कबीरा गुनाहों में सबसे बड़ा कबीरा गुनाह है) जैसे कोई कहे: जो अल्लाह चाहे और आप चाहें, ग़ैरुल्लाह की कसम खाना, थोड़ी सी रियाकारी (पाखण्ड), शिर्क आधारित जंतर लटकाना, अपशकुन लेना, हाथ की रेखाओं को पढ़ना एवं सीप लटकाना इत्यादि यह समझते हुये कि यह सुरक्षा करेगा अथवा बुरी नज़र लगने से बचाएगा।

शिर्क -ए- अकबर

(यह इस्लाम धर्म से निष्कासित करने वाला है, तथा यदि इसी स्थिति में मृत्यु हो गई तो कभी माफ़ नहीं किया जायेगा) ऐसा करने वाला व्यक्ति दूसरों को अल्लाह के समान बना लेता है तथा अल्लाह से प्रार्थना करने के समान उससे प्रार्थना करता है, या उससे भयभीत होता है, या उससे आशा रखता है अथवा उससे अल्लाह स प्रेम करने के समान प्रेम करता है, या पूजा के किसी प्रकार को उसके लिये अंजाम देता है।